بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ
دفتر مجلس انصاراللہ بھارت
Office Of The Majlis Ansarullah Bharat
Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA
Ph:+91-1872-220186, Fax:+91-1872-224186, Mob.98150-16879, E-Mail:ansarullah@qadian.in
.Mob:9682536974, Khulasa khutba of 26.12.25

मुहब्बते इलाही के परवेश में आँहज़रत ﷺ के पवित्र जीवन का ईमान वर्धक एवं मन मोहक वर्णन।

सारांश ख़ुत्बः जुमः

सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआलबिनस्रिहिल अज़ीज़ि, यू.के., स्थान मस्जिद मुबारक,बयान फर्मूदः (नबुव्वत की तिथि 26 ,1404 हश) 26.12. 2025

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

امّا بعد فاعوذ باللہ من الشیطٰن الرجیم ۔ بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعَالَمِیۡنَ ۔ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ ۔ مٰلِکِ یَوۡمِ الدِّیۡنِ ۔ اِیَّاکَ نَعۡبُدُ وَاِیَّاکَ نَسۡتَعِیۡنُ ۔ اِہۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِیۡمَ ۔ صِرَاطَ الَّذِیۡنَ أَنۡعَمۡتَ عَلَیۡہِمۡ غَیۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَیۡہِمۡ وَلَا الضَّآلِّیۡنَ ۔

तशह्हुद ,तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनसरिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- पिछले ख़ुत्बे में मैंने आंहज़रत ﷺ की सीरत के संदर्भ में कुछ बातें की थीं। आज अल्लाह तआला की मुहब्बत के हवाले से आप स. के जीवन चरित्र के कुछ आयाम बयान करूंगा। हम देखते हैं कि आप स. की सीरत के इस आयाम से अल्लाह तआला के आप स. से स्नेह की भी अभिव्यक्ति होती है, केवल आप स. की ही अल्लाह तआला से मुहब्बत नहीं बल्कि अल्लाह तआला की भी आप स. से मुहब्बत है, और फिर अल्लाह तआला ने इस अभिव्यक्ति के बाद आप स. का मार्ग दर्शन फ़रमाया और फिर किस प्रकार इस प्रेम में और अधिक बढ़ कर आप स. ने अपनी उम्मत की तरबियत और मार्ग दर्शन भी किया। इस प्रेम की अभिव्यक्ति हम विभिन्न रिवायतों में देखते हैं जो प्रेम अल्लाह तआला ने आप स. से किया था, और जो आप स. को अल्लाह तआला से प्रेम था। आप स. ही वे सम्पूर्ण मानव हैं कि जिनके स्तर तक कोई नहीं पहुँच सकता, हां! अल्लाह तआला ने यह फ़रमाया है कि तुम्हारे लिए नमूना हैं, इनका अनुसरण करने का प्रयास करो। यही कारण है कि अल्लाह तआला ने आप स. के द्वारा यह भी घोषणा करवा दी कि लोगों को

बता दो कि तू कह दे कि ऐ लोगो! यदि तुम अल्लाह से प्रेम करते हो तो मेरा अनुसरण करो, इस प्रकार वह भी तुम से प्रेम करेगा तथा तुम्हारे दोष दूर कर देगा, और अल्लाह अत्यंत क्षमाशील एवं निरन्तर दया करने वाला है। अतः अल्लाह तआला की प्रेम दृष्टि प्राप्त करने के मार्ग भी आप स. के सुन्दर नमूने से ही सीखने होंगे।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि अल्लाह तआला से आप स. से प्रेम के जो दृश्य हमें दिखाई देते हैं, हदीसों में ऐसी रिवायतें मिलती हैं कि आप स. अल्लाह तआला से वह प्रेम चाहते हुए यह दुआ करते थे कि ऐ अल्लाह! मैं तुझसे तेरा प्रेम मांगता हूँ और उसका प्रेम जो तुझ से प्रेम करता है, और ऐसे अमल करने का सामर्थ्य मांगता हूँ जो मुझे तेरे प्रेम तक पहुंचा दे। ऐ अल्लाह! तू अपना प्रेम मुझे मेरे अस्तित्व एवं मेरे अनुयाइयों को ठन्डे पानी से भी अधिक प्यारा बना दे। अतः यह वह दुआ है जो आज हर उस व्यक्ति को करनी चाहिए जो आंहज़रत ﷺ से प्रेम करने का दावा रखता है और जो यह चाहता है कि वह भी अल्लाह तआला से प्रेम प्रकट करे, अल्लाह तआला का प्रेमी बने और अल्लाह तआला उस पर अपनी कृपा करे।

अल्लाह तआला से प्रेम करने की एक घटना का वर्णन हज़रत आयशा रज़ी. ने इस प्रकार बयान फ़रमाई है कि मैंने एक रात रसूलुल्लाह स. को सजदे की अवस्था में यह दुआ करते हुए सुना कि मैं तेरी प्रसन्नता की शरण में आता हूँ, तेरी नाराज़गी से, और तेरी क्षमा की शरण में आता हूँ तेरे दंड से, मैं तेरी प्रशंसा को नहीं गिन सकता, तू वैसा ही है जैसा तू ने अपने आपकी प्रशंसा की है। इसी प्रकार हज़रत आयशा रज़ी. फ़रमाती हैं कि एक रात मैंने आप स. को यह कहते हुए सुना- तेरे लिए मेरा शरीर एवं मेरे प्राण सजदे में हैं, मेरा दिल तुझ पर ईमान लाता है, ऐ मेरे रब! ये मेरे दोनों हाथ हैं जो तेरे सामने फैले हुए हैं और जो कुछ मैंने इनके द्वारा अपनी जान पर अत्याचार किया, वह भी तेरे सामने है। ऐ अति महानता वाले! जिससे हर बड़ी से बड़ी बात की आशा की जाती है, तू सारे बड़े बड़े पापों को क्षमा कर दे। फिर आप स. ने हज़रत आयशा रज़ी. से फ़रमाया कि बात यह है कि जिब्रील मेरे पास आए थे और उन्होंने मुझे ये वाक्य पढ़ने के लिए कहे थे, इस लिए तुम भी अपने सजदों में ये पढ़ा करो। जो मनुष्य ये दुआएं पढ़ेगा वह सजदे में से सिर उठाने से पहले क्षमा कर दिया जाएगा। एक अन्य रिवायत के अनुसार जिब्रील अलै. ने कहा कि आपका रब आप स. से कहता है कि आप बक़ी नामक कब्रिस्तान के पास जाएँ और उसमें दफ़न होने वालों के लिए क्षमा की दुआ करें। हज़रत आयशा रज़ी. ने कहा कि क्या मैं भी इस सवाब में शामिल हो सकती हूँ अब, मैं भी वहाँ से होकर आई हूँ, तो मैं क्या दुआ करूं? आप स. ने फ़रमाया- तुम कहो कि मोमिनो और मुसलमानों में से इस घर वालों पर सलाम हो और अल्लाह तआला हममें से से आगे जाने वालों और बाद में जाने वालों पर दया करे, और यदि अल्लाह ने चाहा तो हम भी तुमसे मिलने वाले हैं।

हज़रत इब्ने उमर रज़ी. ने हज़रत आयशा रज़ी. से पूछा कि रसूलुल्लाह ﷺ की सबसे प्यारी और अनूठी बात जो आपने देखी हो, वह मुझे बताएं? यह सुनकर हज़रत आयशा रज़ी. रो पड़ीं और फ़रमाया कि आप स. का हर अमल ही प्यारा और अनूठा था। फिर जब हज़रत आयशा रज़ी. ने बयान किया कि एक बार आप स. मेरी बारी की रात मेरे पास पधारे और मैंने आप स. के शरीर को अनुभव किया तो आप स. ने फ़रमाया कि ऐ आयशा! यदि मुझे आज्ञा दो तो आज की शेष रात में मैं अपने रब की इबादत करूं? मैंने निवेदन पूर्वक कहा कि मुझे आप स. की निकटता एवं अभिलाषा दोनों प्यारे हैं। वज़ू करने के बाद आप स. खड़े हुए और क़ुरआन करीम पढ़ने लगे और रोने लगे, यहाँ तक कि मैंने देखा कि आंसू आप स. के कपड़ों तक पहुँच गए। फिर आप स. ने अपने दाएं ओर टेक लगाई और अपने दाहिने हाथ को अपने गाल के नीचे रखा और फिर रोने लगे, यहाँ तक कि मैंने देखा कि आंसू धरती तक पहुँच गए। फिर हज़रत बिलाल रज़ी. आप स. को फजर की सूचना देने के लिए आए, जब उन्होंने आप स. को रोते हुए देखा तो निवेदन किया कि या रसूलुल्लाह स! आप रो रहे हैं? जबकि अल्लाह तआला ने आप स. के अगले पिछले समस्त दोष क्षमा कर दिए हैं। आप स. ने फ़रमाया कि क्या मैं आभारी बन्दा न बनूँ।

आंहज़रत ﷺ का पूरा जीवन ईश्प्रेम में डूबा हुआ था इन्हीं ईश्वरीय प्रेम के दृश्यों को देख कर मक्का के लोग यह कहते थे اِنَّ مُحَمَّدً عَشِقَ رَبَّه अर्थात मुहम्मद ﷺ तो अपने रब पर आशिक़ हो गया है।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि आंहज़रत ﷺ का यह नमूना और अल्लाह तआला से प्रेम का यह नमूना था जिसके कुछ उदाहरण मैंने पेश किये हैं, इसी नमूने का प्रभाव था कि सहाबा रज़ी. में एक क्रांति पैदा हुई और उन्होंने वह स्तर प्राप्त किया कि जिसके विषय में इससे पहले सोचा भी नहीं जा सकता था, और यही वह सम्पूर्ण एवं व्यापक शिक्षा है कि जिसे आप स. के सच्चे सेवक हज़रत मसीह मौऊद अलै. ने भी अपनाया। आप अलै. एक स्थान पर फ़रमाते हैं कि आप अलै. को अल्लाह तआला ने भी आंहज़रत ﷺ के सम्पूर्ण अनुसरण के कारण यह सौभाग्य प्रदान किया है। आज हम जो यह दावा करते हैं कि हम आंहज़रत ﷺ के वास्तविक अनुयायी हैं और हमने आप स. के सच्चे सेवक के हाथ पर बैअत करके यह पुनः वादा किया है कि भविष्य में हम अपने जीवन को ख़ुदा तआला के आदेशानुसार ढ़ालने के प्रयास करेंगे, तो हमें इस ओर ध्यान देना चाहिए कि हमने हर काम केवल अल्लाह के लिए करना है और उसकी मुहब्बत में आगे बढ़ते रहने के प्रयास करने हैं। अल्लाह तआला हमें इस बात की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

हुज़ूरे अनवर ने फ़रमाया कि पकिस्तान के अहमदियों के लिए आजकल दुआ करें, वहाँ मुबारक सानी साहब, जिन पर क़ुरआने करीम रखने, उसे पढ़ने और पढ़ाने के आरोपों के अंतर्गत एक अभियोग चल रहा था, उनको सेशन जज ने आजीवन कारावास का दंड देने को कहा है। हम

दुआ करते हैं कि अल्लाह तआला इन दुष्टों की पकड़ के जल्द सामान करे। अल्लाह तआला की पकड़ इन्शाल्लाह जल्दी इन पर आएगी और इसकी संभावना भी दिखाई दे रही है, परन्तु हमारी दुआओं में कमी अथवा अमल या इबादत के हक़ उचित रूप में अदा न होने के कारण से इनमें देर न हो जाए, इसकी चिंता होनी चाहिए। जैसा कि आँहज़रत ﷺ भी कभी कभी इस भय से बादलों को देख कर दुआ किया करते थे। अतः दुआओं की ओर अत्यधिक ध्यान देने की आवश्यकता है। इसी प्रकार शेष दुनिया के पीड़ितों के लिए भी दुआ करें, अल्लाह तआला हर जगह, हर एक को शान्ति प्रदान करे और हर फ़ितने से बचा कर रखे।

अन्त में हुज़ूरे अनवर ने दो मृतकों का सदवर्णन फ़रमाया- पहला वर्णन मुकर्रम मौलाना जलालुद्दीन नय्यर साहब, पूर्व सद्र सदर अंजुमन अहमदिय्या और सद्र मजलि स तहरीक जदीद क़ादियान का था। इनके वालिद मुकर्रम एच. हुसैन साहब, केरला ने 1922 में अहमदिय्यत क़ुबूल की। जमाआती पत्रिका सत्य दूदन के सम्पादक नियुक्त हुए। 1950 में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ी. के क़ादियान की आबादी के आन्दोलन को स्वीकार करते हुए अपनी पूरी फेमली को लेकर क़ादियान आ गए और वहीं आकर बस गए, परन्तु एक वर्ष के भीतर ही क़ादियान में इनका देहांत हो गया। नय्यर साहब की माता श्री मोहतरमा ज़ुबैदा साहिबा ने फिर चौधरी अब्दुल हक़ सा हब दर्वेश क़ादियान से दूसरी शादी कर ली। जलालुद्दीन नय्यर साहब की आरम्भिक शि क्षा क़ादियान में ही हुई और 1963 में फिर इन्होने मौलवी फ़ाज़िल की परीक्षा पास की। आपने इंस्पेक्टर बैतुल माल के रूप में लम्बी अवधि तक सेवा की, इसी कारण से इनके भारत के दूर सुदूर क्षेत्रों में जमाअत के लोगों के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध भी थे। तरेसठ वर्ष तक मरहूम को जमाअत की सेवा का सुअवसर प्राप्त रहा। इस बीच आडिटर, मुहासिब तथा फिर लम्बी अवधि तक नाज़िर बैतुल माल आमद के रूप में सेवा का अवसर मिला। सात वर्षों तक ये सद्र सद्र अंजुमन क़ादियान भी रहे और फिर जब तक स्वस्थ रहे सद्र सद्र मजलिस तहरीके जदीद भी थे, एथि लीट भी थे। मरहूम के दो बेटे और एक बेटी हैं जो जमाअत की सेवा कर रहे हैं। इसी प्रकार मीर हबीब अहमद साहब पुत्र मीर मुशताक़ अहमद साहब के भी सदगुणों को बयान फ़रमाया और दोनों मृतकों की मग़फ़िरत एवं दर्जात की बुलंदी के लिए दुआ की और जनाज़ा ग़ायब पढ़ाने की घोषणा फ़रमाई।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ. عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ.

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुगम, सौम्य एवं सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है सम्पर्क अनुवादक- 9781831652

18001032131–टोल फ्री नम्बर अहमदिय्या मुस्लिम जमाअत, पंजाब